

पद २८२

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

सुनत तेरी बन्सी दिवानी भई ॥ध्रु.॥ बन्सी की धून सुन नंगी नाच
रही । थोरीसी सूद ना रही ॥१॥ मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी ।
चरनन लाग रही ॥२॥